बरवै बारिधि

(अवधी भाषा ब्यवहार)



-शत्रुहनलाल विद्यार्थी

बरवै बारिधि

(अवधी भाषा व्यवहार)



शत्रुहनलाल विद्यार्थी

कवि परिचय

नाम : शत्रुहनलाल 'विद्यार्थी'

पिता : स्व. श्री बद्री प्रसाद

माता : स्व. श्रीमती रामदुलारी

जन्म : 14 जुलाई 1942 ई.

पता : ग्राम पूरे खुशली, पो. कोठी, जिला बाराबंकी

नम्र निवेदन

आप के हाथों में बरवै बारिधि पुस्तक है। यह अनपढ़ किसान कवि की मन गढ़त अर्थात साहित्यिक गुणों से हीन अनधिकृत धृष्टता है या समझ लीजिए गुरूजनों का आशीर्वादात्मक उत्साह है। इसमें जिन-जिन का समावेश है वे सब मेरी जानकारी में सही हैं। मेरा कहने का ढंग भले सही या शुद्ध न हो किंतु मेरा कहना सत्य है।

मैनें लिखा बहुत है जो भी रचना साहित्य मर्मज्ञ देखते हैं तो कहते हैं ठीक है सही है बस इसी से मेरा मनोबल बढ़ता रहता है, और मैं लिखता रहता हूँ। बरवै के दो नाम और हैं ध्रुव कुरंग।

बरवै छंद लिखने में मुझे बड़े कठिन जान पड़ते हैं फिर भी मैंने लिखा है। अब विद्वान पाठक बतायेंगे कि यह क्या है। और कैसी रचनाएं है। एक बात और कहनी है वह यह है कि कवि कल शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में कोलाहल शब्द का लगभग पाँच या छह बार किया है। यही शब्द कहीं छ: मात्रायें मानकर पढ़ा जाता है तो कहीं पाँच मात्रायें मानी जाती है। उसी प्रकार इस में भी शब्दों में लिखावट और उच्चारण में भेद है। जिसे विद्वान समझते हैं।

सच्चे सन्त का उल्लेख यद्यपि अप्रासंगिक जान पड़ता है फिर भी नम्रता और दृढ़ता यह बताना आवश्यक है कि पढ़ाई-लिखाई भगवत में विशेष महत्व नहीं रखती। आत्म शुद्धि (निर्विकारता) में चतुराई की कोई आवश्यकता नहीं। इस सत्य कोई भी मानने को बाध्य नहीं है किसी को पढ़कर यदि सही न जान पड़े तो वह मुझे अज्ञानी किसान कवि जानकर क्षमा करें।

निवेदक

शत्रुहनलाल विद्यार्थी

विषयानुक्रम

मंगलाचरण	6
सच्चे सन्त	8
जाड़ा	10
तिलवा (गणेश चतुर्थी)	15
खिचरी (मकर संक्राति)	17
तिलवा (गणेश चतुर्थी)	19
सगुण उपासना और मूर्ति पूजा	21
नवा-नवान्न	25
बसन्त पंचमी	27
नवरात्रि	35
रामनवमी	37
बैसाख	39
जेठ	41
वर्षा	48
रक्षा बंधन (सनिन्नौ)	55
भादौं	62
कुवार (आश्विन)	75
कातिक	80
लुप्त होते खरपतवार (जड़ी बूटियाँ)	87

नैतिकता	91
निरवाह	102
गोपालन	106
भाषण	109
संगठन	112
हितकारी सुझाव	115
क्षेमकरी	119
हरिल या हरियल पक्षी	123
पेड़ पर न चढ़ने वाला पंक्षी (टिटिहरी)	125
गिलहरी की ममता	128

मंगलाचरण

जग के पालन कर्ता, सुनो पुकार।

देवी देउता सब मा रूप तुम्हार।।

गनपति सबसे पहिले पूजे जात।

महिमा तुमरी नाहीं बरनि सिरात।।

कृपा करौ प्रभु जापर, कवि बन जात।

सोइ समाज का हे, प्रभु बनत प्रभात।।

ताकी कविता तम का हरइ-सुहाय।

सो जन-जन के मन मा धँसि बसि जाय।।

बरवै मा कहि पाई हम सब साँच।

जड़ता जाड़ा हित सो, होवें आँच।

पढ़ि सुनि कै सज्जन गन, होयँ अनन्द।

ऐसि लिखाऊ हमसे बरवै छंद।।

बड़े-बड़े गुरुजन अस, दिहिनि निदेस।

तिनकै पूरन आज्ञा होय विसेस।।

लछमी सारद काली रूप अनूप।

बिनवत तुमका सादर हैं सुर भूप।।

दुर्गा कंचन तुमरे अगनित नाम।

ध्यावै पूजै जो-सो, लह-मन काम।।

पूजन ध्यान न जानौं, नहिं कुछ ज्ञान।

जगदीसुरी मनावौ बिना बिधान।